दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-1

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF OPT-23 **HL-2301**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): पुरन

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): Test - 1, 22 June 2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	3	9	0	4	8

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained) ____________

टिप्पणी (Remarks) ____________

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

A3

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

अमीर खुसरो ने जिस समय अपने साहित्य की रचना की, उस समय खड़ी बोली हिंदी अपने शैशव काल में थी। बावजूद इनके खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का जो स्वरूप दिखायी देता है, वह आधुनिक खड़ी बोली के काफी निकट प्रतीत होता है।

खुसरो ने अपने साहित्य में पहेलियां, मुकरियां, 'दो सुखने' इत्यादि की रचना में मुख्यत: खड़ी बोली की आरंभिक प्रवृत्तियों का निदर्शन कराया है।

उदाहरण के लिये -

" एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा,
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रस्तुत उदाहरण में शब्दावली के स्तर पर खड़ी बोली हिंदी के शब्दों यथा मोती, थाल, सिर इत्यादि का प्रयोग द्रष्टव्य है।

वहीं आकारांतता (धरा, भरा) की प्रवृत्ति भी खड़ी बोली से ही प्रभावित है।

एक अन्य उदाहरण में भी यही प्रवृत्तियाँ द्रष्टव्य है -

"पान क्यों सड़ा,
घोड़ा क्यों अड़ा,
- फेरा न था।"

इस रूप में देखा जा सकता है कि खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप का निदर्शन, भले ही वह अल्प पैमाने पर ही हो, होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन के एक लोकप्रिय नेता थे, जिनकी मान्यता आमजन में अत्यधिक थी।

राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के दौरान ही तिलक ने 'स्वराज' की माँग उठाई, जिसके अंतर्गत राष्ट्रभाषा की माँग भी प्रमुख थी।

तिलक ने विभिन्न पैमानों पर राष्ट्रभाषा हेतु 'हिन्दी' की उपयुक्तता स्वीकार की तथा निजी स्तर पर भी हिंदी के विकास हेतु प्रयास किये।

बाल गंगाधर तिलक ने हिन्दी के लेखन को बढ़ावा देने के लिये 'तिलक फॉन्ट' का आविष्कार किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वहीं इन्होंने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने का कार्य किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का विकास एक सतत प्रक्रिया रही, जिसमें स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कई महापुरुषों ने योगदान दिया। इसी कड़ी में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन का नाम भी अविस्मरणीय है, जिन्हें 'हिन्दी' की सेवा को अपने जीवन का ध्येय बनाया। हिन्दी भाषा के विकास में दिये गये अप्रतिम योगदान के लिये ही इन्हें 'हिन्दी-प्रहरी' के रूप में भी ख्याति मिली।

हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिये इन्होंने अपने शहर में पुस्तकालय की स्थापना की।

वहीं कांग्रेस पार्टी में रहते हुये इन्होंने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

सदैव हिन्दी के प्रयोग को लेकर आवाज उठाई।

यही नहीं, संविधान सभा तथा बाद में संसद में भी वे बिना किसी झिझक के हिन्दी के पक्ष में अनवरत खड़े रहे।

इस रूप में हिंदी के सेवक व प्रचारक के रूप में निश्चित रूप से पुरुषोत्तम दास टंडन का योगदान सदैव याद रखा जायेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

अब्दुल रहीम खानखाना अकबर के प्रसिद्ध सेनापति थे, किंतु उनकी प्रसिद्धि का मुख्य आधार उनकी कविता थी।

रहीम का साहित्य मार्मिकता एवं भावुकता से युक्त था। उनकी रचनाओं में हमें खड़ी बोली हिंदी का आरंभिक स्वरूप दिखायी देता है। उदाहरण के लिये-

"रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून
पानी गये न ऊबरें, मोती, मानुस, चून।"

उपरोक्त उदाहरण में 'पानी' शब्द खड़ी बोली का शब्द है।

एक अन्य उदाहरण में भी खड़ी बोली हिन्दी के समान वाक्य-विन्यास एवं काव्य-संरचना देखी जा सकती है-

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय॥"

इसमें उदाहरण में स्पष्ट तौर पर शब्दावलियों तथा विन्यास के स्तर पर खड़ी बोली की प्रवृत्तियों का निदर्शन किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'मारवाड़ी' बोली

'मारवाड़ी', राजस्थानी हिन्दी की एक प्रमुख बोली है।

यह मुख्यतः पश्चिमी राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र, जिसके अंतर्गत जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर आदि जिले आते हैं, में विशेष रूप से बोली जाती है।

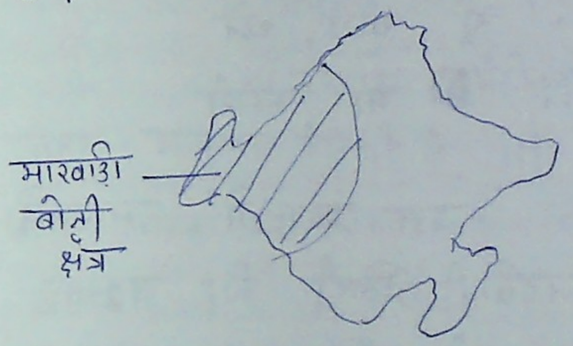

चित्र: राजस्थान का नक्शा

मारवाड़ी बोली की प्रमुख भाषिक विशेषताएँ निम्न प्रकार है –

(i) 'न' को 'ण' करने की प्रवृत्ति

पानी → 'पाणी'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) 'ब' को 'व' करने की प्रवृत्ति -

बरसात → 'वरसात'

(iii) 'अ' को 'ऊ' करने की प्रवृत्ति -

बादल → 'बादऊ'

(iv) सर्वनाम

मैं → मूँ, म्हारा, मनै

तुम → थूँ, थारा, थनै

हम → मेह, म्होरो

इस रूप में 'मारवाड़ी' बोली, राजस्थानी हिन्दी की प्रमुख बोली है, जो विश्व भर में अपनी मिठास के लिये प्रसिद्ध है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में जब संपूर्ण राष्ट्र 'स्वदेशी' व 'एकता' के मुद्दों पर एकमत हो रहा था, तब राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं ने एक स्वर में एक 'राष्ट्र भाषा' की आवश्यकता की मांग का समर्थन किया।

राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख नेता महात्मा गाँधी ने भी राष्ट्र-भाषा को भारत की एकता के लिये जरूरी बताया। उन्होंने तो 'स्वराज्य' के प्रश्न को भी राष्ट्र-भाषा से जोड़ा तथा राष्ट्रभाषा के रूप में 'हिन्दी' को विभिन्न आधारों पर उपयुक्त माना।

गाँधी जी ने कहा कि स्वराज्य करोड़ों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भूखे मरने वाले अन्त्यजों का है और उनकी भाषा अंग्रेजी नहीं हो सकती है।

महात्मा गाँधी की प्रेरणा से ही 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के अधिवेशनों में 'हिन्दी' को महत्व मिलने लगा।

कांग्रेस के अधिवेशनों में भाषण व प्रस्ताव हिन्दी में पारित होने लगे।

यही नहीं कांग्रेस की प्रादेशिक इकाईयों को अपने काम-काज हिन्दी में करने की प्रेरणा दी गयी।

महात्मा गाँधी ने इंदौर हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता भी की तथा राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास की पुरजोर वकालत भी की।

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उन्होंने वर्धा में 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य हिंदी का प्रचार-प्रसार था।

महात्मा गाँधी की प्रेरणा से असम तथा दक्षिणी भारत के गैर हिंदी राज्यों में भी राष्ट्रभाषा प्रचार समितियों की स्थापना की।

स्वयं महात्मा गाँधी के सुपुत्र ने दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की कमान संभाली।

तत्कालीन मद्रास, केरल, आंध्र राज्यों में शिक्षकों को हिन्दी भाषा का प्रशिक्षण देने हेतु स्कूल खोले गये।

यही कारण रहा कि दक्षिण भारत के राज्यों में हिंदी के प्रति रुझान बढ़ा।

इस रूप में कहा जा सकता

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है कि महात्मा गाँधी ने स्वयं आगे बढ़कर राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास-यात्रा की बागडोर थामी तथा हिन्दी को देश- ~~के~~ के कोने-कोने में पहुँचाकर राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति को मजबूती प्रदान की।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

हिन्दी की मानक व्याकरणिक व्यवस्था में संस्कृत के तीन वचनों के स्थान पर केवल दो ही वचन - एकवचन तथा बहुवचन माने गये हैं।

हालाँकि एकवचन से बहुवचन में परिवर्तन के कोई निश्चित नियम मानक हिन्दी में नहीं माने गये, तथापि कुछ प्रवृत्तियाँ स्थापित हो गयी हैं -

(i) एकवचन पुल्लिंग में यदि अंत में 'आ' हो तो बहुवचन में 'ए' हो जाता है -

↳ बच्चा → बच्चे
↳ लड़का → लड़के

(ii) वहीं स्त्रीलिंग में यदि अंत में 'ई' हो, तो बहुवचन में 'इयाँ' हो जाता है।

↳ लड़की → लड़कियाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) पुल्लिंग कर्ता के वचन में परिवर्तन के साथ क्रिया में भी आवश्यक परिवर्तन निम्नलिखित रूप में हो जाता है -

- लड़का दौड़ता है।

बहुवचन → लड़के दौड़ते हैं।

(iv) हालांकि स्त्रीलिंग कर्ता के ~~[illegible]~~ संदर्भ में क्रिया में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

- लड़की दौड़ती है।

बहुवचन → लड़कियाँ दौड़ती हैं।

Copyright Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कबीरेतर संतकवियों के साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वरूप का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संत साहित्य, उस साहित्य को कहा गया जो भक्तिकाल के दौरान संत कवियों द्वारा अपनी मान्यताओं के प्रचार के लिये रचा गया।

यूं तो भक्तिकाल में कबीर सबसे लोकप्रिय कवि रहे, किंतु उनके अतिरिक्त भी कई संत कवियों ने ऐसी अमर रचनायें की, जिन्होंने भारतीय ~~जनमानस~~ जनमानस के हृदय में गहरी पैठ की।

कबीरेतर संत कवियों में रैदास, नानक, मीरा, तुलसी, सूरदास इत्यादि प्रमुख रहे।

चूंकि तत्कालीन समय खड़ी बोली के विकास की भी आरंभिक अवस्था थी, इसलिये इन संत कवियों के साहित्य में

Copyright Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भी कहीं-कहीं खड़ी बोली का स्वरूप दिखायी देता है।

रैदास –

" जाति ओछा, पाति ओछा, ओछा जनमु हमारा
राम राज्य की सेवा कीन्हीं, कहै रविदास चमारा।

उपरोक्त उदाहरण में आकारांतता (ओछा, हमारा, चमारा) की प्रवृत्ति खड़ी बोली का ही प्रभाव है।

मीरा –

" पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे"

~~नाचे~~ 'ऐ' का प्रयोग (नाचे), खड़ी बोली की विशेषता।

सूरदास –

'निर्गुण कौन देस को बासी'

'ण' का प्रयोग खड़ी बोली की विशेषता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 20

आरंभिक हिन्दी का व्याकरणिक स्वरूप अपभ्रंश, अवहट्ट से चली आ रही व्याकरणिक परिवर्तन की परंपरा का परिणाम थी।

इसे निम्न स्तरों पर समझा जा सकता है –

(i) 'हिं' विभक्ति का प्रयोग विभिन्न अर्थों में होने लगा –
– "राजा गरबहिं बोले नाही"
– "चरणोदक ले सिरहिं चढ़ावा"

(ii) निर्विभक्तिक प्रयोग और अधिक बढ़ने लगे

(iii) 'ड़' और 'ढ़' का प्रयोग और बढ़ने लगा।

(iv) 'ऐ' और 'औ' के रूप में नई ध्वनियों का प्रयोग बढ़ा।
– बैल, चौड़ा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(v) 'क्षतिपूरक दीर्घीकरण' की प्रवृत्ति -

↳ कर्म → कम्म → काम

(vi) ~~कारक व्यवस्था~~ सर्वनाम :-

↳ 'तुम', 'तुम्हें' जैसे सर्वनामों का विकास

(vii) कारक - व्यवस्था -

कर्ता - ने
कर्म - को
करण - से
सम्प्रदान - के लिये
अपादान - को
संबंध - का, के, की
अधिकरण - में, पर

(viii) लिंग - व्यवस्था

↳ संस्कृत के तीन लिंगों के स्थान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पर दो ही लिंग (स्त्रीलिंग, पुल्लिंग) रह गये

→ 'नपुंसक लिंग' का लोप

(ix) वचन - व्यवस्था :

संस्कृत के तीन वचन (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) के स्थान पर केवल दो ही वचन रह गये। (एकवचन, बहुवचन)

(x) विशेषण :-

↳ कृदंतीय विशेषणों का प्रयोग आरंभ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी की क्रिया-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी की मानक क्रिया-व्यवस्था के अंतर्गत 'क्रिया' वाक्य-संरचना का महत्वपूर्ण भाग है।

परिभाषा के स्तर पर देखें तो 'क्रिया' से तात्पर्य है - "किसी कार्य को करना या होना पाया जाना"।

उदाहरण के लिये -

⊙ राम खाना खाता है।
कर्ता कर्म क्रिया

- उपरोक्त उदाहरण में 'कर्ता' राम द्वारा 'खाने' को 'खाये जाने' का कार्य क्रिया जाता है, इसलिये 'खाता है' यहाँ क्रिया है।

- जैसा कि उदाहरण में देखा जा सकता है हिंदी वाक्य-संरचना में 'क्रिया' की स्थिति 'कर्म' के पश्चात आती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है अर्थात

कर्ता - कर्म - क्रिया - सहायक क्रिया ।

क्रिया के भेद :-

हिन्दी में कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद माने गये है -

(i) **सकर्मक क्रिया :-**

- यदि वाक्य में क्रिया के साथ 'कर्म' (जिस पर कार्य किया जाता / होता है) उपस्थित हो तो, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है। उदाहरण -

• सीता गाना गाती है ।
कर्म क्रिया

(ii) **अकर्मक क्रिया :-**

यदि वाक्य में 'क्रिया' के साथ कोई 'कर्म' उपस्थित न हो, तो उसे

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अकर्मक क्रिया कहते है -

उदाहरण के लिये —

• राम सोता है ।
केवल क्रिया

Copyright Drishti The Vision Foundation

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी का योगदान महत्तम रहा है।

श्री किशोरीदास वाजपेयी द्वारा रचित व्याकरण ने हिन्दी में मानकीकरण की समस्या को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन्होंने संस्कृत के कठिन शब्दों के तद्भवीकरण का सार्थक प्रयास किया।

वहीं पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में भी उनके व्यावहारिक लेखन की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

सिद्ध साहित्य, वस्तुतः सिद्ध-संप्रदाय के संतों द्वारा अपने संप्रदाय के प्रचार-प्रसार हेतु रचा गया साहित्य है।

वस्तुतः 'सिद्ध-संप्रदाय', बौद्ध धर्म का हिंदू परंपरा से प्रभावित संप्रदाय। इसलिये इन्हें 'वाममार्गी बौद्ध' भी कहा गया है।

सिद्ध संत मूलतः 'पंचमकार' की अवधारणा (मांस, मदिरा, मैथुन, इत्यादि) में विश्वास रखते थे।

राहुल सांकृत्यायन के अनुसार सिद्धों की संख्या 84 मानी गयी है।

प्रमुख सिद्ध संत हैं - सरहपा, शबरपा, लुईपा आदि।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सिद्ध-साहित्य में हमें 'खड़ी-बोली' का आरंभिक स्वरूप दिखायी देता है, जिसे निम्नलिखित उदाहरण में देखा जा सकता है -

"जाणि के अजाणि होय, बात तूं ले पछाणि
चेला हो दूआ लाभ होइगा, गुरु होइयो आणि।"

उपरोक्त उदाहरण में 'न' से 'ण' में परिवर्तित करने की प्रवृत्ति खड़ी बोली हिन्दी की प्रमुख विशेषता है।
एक अन्य उदाहरण में भी यही प्रवृत्ति देखी जा सकती है -

"जहँ मन पवन न संचरई
रवि शशि नाह प्रवेश"
------ "

स्पष्ट है कि सिद्ध साहित्य में हमें खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप का निदर्शन होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

'कन्नौजी' पश्चिमी हिन्दी वर्ग की एक प्रमुख बोली है, जो मुख्यत: ~~मध्य प्रदेश~~ 'कन्नौज' क्षेत्र में बोली जाती है।

→ कन्नौजी वस्तुत: 'उ' बहुला बोली है।

→ पश्चिमी हिन्दी की 'ओकारांतता' की प्रवृत्ति 'कन्नौजी' में भी दिखायी देती है - खायो, गयो।

→ 'च' का 'छ' में परिवर्तन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) विकारी और अविकारी पद

हिन्दी की व्याकरणिक व्यवस्था के अंतर्गत दो प्रकार के पद माने गये हैं -

(i) विकारी पद :-

ऐसे पद जो परिवर्तनशील होते हैं अर्थात वाक्य में किसी परिवर्तन पर उन पदों में भी परिवर्तन होता है, उन्हें विकारी पद कहते हैं

→ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण ~~क्रिया~~, क्रिया विकारी पद हैं, क्योंकि ये परिवर्तनीय हैं।

संज्ञा → राम खाता है।
सीता खाती है।

सर्वनाम → वह दौड़ता है।
वे दौड़ते हैं।

विशेषण → छोटा लड़का
छोटी लड़की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

क्रिया – सोहन दौड़ता है
राधा दौड़ती है।

अविकारी पद – ऐसे पद जो वाक्य में किये गये अन्य परिवर्तनों से अप्रभावित रहते है अर्थात जिनमें कोई विकार नहीं आता, उन्हें अविकारी पद कहते है।

→ क्रिया-विशेषण –
↳ राधा तेज दौड़ती है।
क्रि. वि.

↳ मोहन तेज दौड़ता है।
क्रि. वि.

उपरोक्त उदाहरण में स्पष्ट है कि कर्ता (संज्ञा) में परिवर्तन करने पर क्रिया तो परिवर्तित हो जाती है, किंतु क्रिया-विशेषण (तेज) अपरिवर्तित रहता है। इसलिये क्रिया-विशेषण अविकारी पद है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताएँ

'ब्रजभाषा', पश्चिमी हिन्दी की एक प्रमुख उपभाषा है, जो 'ब्रजक्षेत्र' में बोली जाती है।

ब्रजक्षेत्र के अंतर्गत उत्तरप्रदेश के वृंदावन मथुरा, आगरा, मेरठ, अलीगढ़ तथा राजस्थान का भरतपुर क्षेत्र आता है।

व्याकरणिक विशेषताएँ :–

→ 'ओकारांतता' की प्रवृत्ति
↳ खायो, जाऊंगो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ ③ 'ल' को 'र' करने की प्रवृत्ति
- काले - 'कारे'
- सूरदास के 'भ्रमरगीत' में भी द्रष्टव्य
"जे मधुरा काजर की कोठरी
जे आवहिं ते कारे।
तुम कारे, सुफलक सुत कारे
कारे मधुप भँवारे।"

→

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मुल्ला दाऊद की 'चंदायन', कुतुबन, मलिक मोहम्मद जायसी के 'पद्मावत' में ठेठ अवधी की खालिस मिठास ने अवधी को साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सूफी कवियों द्वारा अवधी प्रयोग का एक प्रमुख कारण था कि उन्होंने अपनी रचनाओं में अवध क्षेत्र की लोककथाओं का आधार लिया था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation